भाग्यनारायण झा

जन्म	-	12 जनवरी 1939
जन्म स्थान	-	ग्राम+पोस्ट-कारज (दरभंगा)
वृत्ति	-	पत्रकारिता,दिसम्बर 1960 ई0 सँ मई 2012 धरि आर्यावर्त, 'हिन्दुस्तान' आ 'दैनिक जागरण' मे क्रमशः कार्यरत। 'मिथिला मिहिर' (पटना) आ हिन्दी साप्ताहिक 'दिनमान' (नयी दिल्ली) मे क्रमशः समीक्षक आ अंशकालीन संवाददाता।
कृति	-	मैथिली सामाजिक नाटक 'मनोरथ' (1965) एकांकी संग्रह 'सोनक ममता' (1970) आ विदेश यात्रा वृतांत 'परदेस' (2007)।
सामाजिक कार्य	-	सामाजिक साहित्यिक आ सांस्कृतिक संस्था चेतना समिति सँ 1961 सँ जुड़ल। 1967-68 मे समितिक संयुक्त सचिव। 1977 सँ 79 धरि प्रचार सचिव। बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियनक कोषाध्यक्ष कतेको वर्ष।
सम्मान	-	पुरस्कार : चेतना समितिसँ चेतना-सेवी सम्मान (2010), राष्ट्रीय स्तरक संस्था विश्व संवाद केन्द्र (पटना) सँ 2013 मे देशरत्न डा. राजेन्द्र प्रसाद पत्रकारिता शिखर सम्मान।

□□□

वैश्वीकरण आ अर्थव्यवस्था

वैश्वीकरण आ भूमंडलीकरण दुनू शब्द एक दोसरक पर्याय अछि। 1970 क दशकक बीचमे विश्वमे एक नव तरहक, धनी आ सम्पन्न राष्ट्र वर्चस्वकेँ सुदृढ़ रहयवला अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाक शुरुआत भेल। एहि नव व्यवस्थाक मुख्य मुद्दा छल मुक्त, नियंत्रणहीन व्यापार, मुदा ओ पूंजी बाजार पर सँ सभ नियंत्रणक समाप्ति। प्रत्यक्ष टैक्समे कटौती, राज्य व्ययमे कमी तथा राज्य द्वारा लागू कयल आर्थिक नियंत्रणक समाप्ति, सार्वजनिक उद्योगक निजीकरण, बहुद्देशीय कम्पनी तथा निजी उद्गमक विश्व अर्थव्यवस्थाक मंच पर राजकीय नियंत्रणसँ मुक्ति। एकर अतिरिक्त काफी समयसँ चलि रहल श्रमिक वर्ग तथा मध्यम वर्गक कल्याणक लेल आंशिक समता मूलक रुझान। राष्ट्रीय सीमाकेँ आर्थिक मामलामे समाप्त करबाक एक नव तरीका प्रारम्भ भेल। एहि नव व्यवस्थाकेँ भूमंडलीकरण नाम देल गेल। एहि नीतिगत परिवर्तनक उद्देश्य रहैक मूल्यक सही निर्धारण आ बाजारक मूल्यक परिवर्तन या संशोधनक आधार पर आर्थिक निर्णय, जे कि अनुकूलतम आ विवेकसम्मत होइक।

एहि भूमंडलीकरणकेँ संभव करऽमे आधुनिक तकनीकी प्रगतिकेँ पैघ भूमिका रहल अछि। भूमंडलीकरणक समर्थक लोकनिक कहब छनि जे वैश्वीकरण-भूमंडलीकरणक कारण विश्वक बाजार आपसमे जुड़ि गेल अछि। पारस्परिक समन्वय भ' रहल अछि। मुदा, एकर विरोधमे कहल जाइत अछि जे जँ ई कथन सही होइत तँ विश्वक वस्तुक मूल्यमे एक समान होयबाक प्रवृति पाओल जाइत। तँ भूमंडलीकरणकेँ गैर समतापूर्ण सेहो कहल जाइत अछि। भूमंडलीकरणसँ विश्व-स्तरीय आर्थिक संपर्क आ लेन-देन बढ़ल अछि। विश्व उत्पादन दरसँ बेसी दर पर विश्व व्यापार बढ़ि रहल अछि। एकरे कहल जाइत छैक विश्व व्यापारमे चमत्कारिक परिवर्तन। कतेको लाख लोग प्रतिदिन राष्ट्रीय सीमा पार क' अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा करैत छथि। विदेशी मुद्राक लेन-देन बढ़ल अछि। भूमंडलीकरणक प्रक्रिया 1990क बाद भारतक परिभाषा सनक बनि गेल अछि। आयात आ निर्यात दुनू सरकारी नियंत्रणसँ मुक्त क' देल गेल अछि।

'वैश्वीकरणकेँ' आधुनिक युगक विशेषता कहल जाइत अछि। सभ तरहक बातकेँ लोक भूमंडलीकरणसँ जोड़िकऽ देखैत अछि। कहल जाइत अछि जे वैश्वीकरणक रथक गति नहि रुकि सकैत अछि आ ने एकर कोनो विकल्प देखऽ मे अबैत अछि। संगहि, वैश्वीकरणकेँ एतेक सकारात्मक, शुभ आ वांछनीय बूझल जाइत अछि जे राजनीतिक, सामाजिक आ आर्थिक नीतिकेँ भूमंडलीकरणक समर्थनमे रखबाक पक्षमे छथि। एकर अनवरत प्रक्रियाक विरोधमे दकियानूसी, प्रतिगामी आ संकीर्ण मानसिकताक प्रतीक कहल जाइछ। एकरा अर्थात् भूमंडलीकरणकेँ विश्वशांतिक गारंटीक रूपमे प्रस्तुत कयल जाइत अछि।

औद्योगीकरण, पूंजीवाद, ज्ञान-विज्ञान आ शिक्षा-संस्कृतिक व्यापक प्रसार, समाजक नाम पर कयल गेल किछु प्रयोग आ लोकतंत्रीय राज्य-व्यवस्थाक अन्तर्गत विश्वक कायाकल्प भ' गेल। भूमंडलीकरण एहि प्रक्रियाक अधुनिकतम चरण मानल जाइत अछि। आधुनिक काल कँ पहिने कहल जाइत छल जे मनुष्य कूपमंडकीय जीवन

जीबैत रहय। ओकर संसार बहुत सीमित छल। जँ कोनो दोसर देश, ओतुक्काक महाप्रतापी सम्राट या कोनो पैघ घटना अथवा कोनो देशक वैभव आदिक जानकारी देर-सबेर पहुंचैत छल तँ लोककेँ ओहि पर विश्वास झट दऽ नहि होइत छलैक।

भूमंडलीकरण, आधुनिकता आ विश्वव्यापी विकास उपर्युक्त दृष्टिकोणक अन्तर्गत करीब-करीब समानार्थ मानल जाइत अछि। विश्वव्यापी पूंजीवादी तथा एकर समर्थक भूमंडलीयता विचाराधारा आ नीत समूहकेँ भूमंडलीकरणक नामक पाछां ई उद्देश्य छलनि जे सरल, सुगम, सुहावना आ कर्णप्रिय शब्द अछि। संसारक उद्योगपति, व्यवसायी, वित्तीय क्षेत्रमे नियंत्रक, चिकित्सक, वैज्ञानिक, इंजीनियर, वित्तीय परामर्शी, राजनीतिज्ञ, मनोरंजनक जगतक सितारा, खिलाड़ी, गायक, आभिनेता, बहुराष्ट्रीय कम्पनी सभक शीर्षस्थ पदाधिकारी जे वैश्वीकरणसँ आनन्द उठा रहल छथि से राजा-महाराजा सभकेँ सेहो दुर्लभ रहनि। जँ विश्वकेँ सम्प्रति छोट सन गांव कहल जाइत छैक तँ सूचना, संचार आ यातायातक साधनक विकास आ ओकर सुलभता महत्वपूर्ण मानल जाइत अछि।

1990क उपरांत वैश्वीकरणक प्रक्रिया भारतक नीतिक परिभाषा सन बनि गेल अछि। एहि नीतिसँ विदेशी कम्पनी आ व्यवसायी वर्गकेँ काफी लाभ भेलनि अछि। वास्तविक भूमंडलीकरणक शक्ति 60 हजारस बेसी बहुराष्ट्रीय अथवा राष्ट्रीय कम्पनी अछि। विश्वक रंगमंच पर एकर काफी धाक एवं दबदबा अछि। वस्तुतः, हुनका लोकनिक अर्थात कम्पनी सभक आचार-व्यवहार राष्ट्रक सीमासँ ऊपर उठि गेल सन देखऽ-सुनऽ मे लगैत अछि।

एक दिस भूमंडलीकरणसँ भारतमे सेहो चमत्कारिक सामाजिक परिवर्तन, सुख-सुविधामे बढ़ोतरी आर्थिक आ व्यापारिक क्रांति आयल अछि तँ दोसर दिस शिक्षाकेँ भूमण्डलीकरणसँ जोड़बाक एहन कुचक्र आ साजिश कयल गेल अछि, जाहि सँ देव-भाषा संस्कृतक उपेक्षा होयब स्वाभाविक। भारतक केन्द्रीय विद्यालय संस्थान आ जर्मनीक गोथे संस्थानक बीच एकटा समझौता भेल अछि जे भारतक साढ़े तीन सौ केन्द्रीय विद्यालयमे विद्यार्थीकेँ विकल्प रहतैक जे ओ जर्मन पढ़य या संस्कृत। एहि योजनाक मूल उद्देश्य ई छैक जे जर्मन भाषा 2017 धरि एक हजार सँ बेसी स्कूल मे पढ़ाओल जाइक। विद्यार्थीकेँ जर्मन भाषा छठासँ बारहवीं कक्षा धरि पढ़ाओल जयबाक व्यवस्था कयल गेल अछि। विद्यार्थी एवं शिक्षक लोकनिकेँ ई प्रलोभन देल गेलनि अछि जे संस्कृत शिक्षक छात्र केँ संस्कृतक स्थान पर जर्मन भाषा पढ़ोताह, हुनका लोकनिकेँ जर्मनीक यात्रा सेहो कराओल जयतनि। जर्मनीक मुख्य उद्देश्य ई छैक जे भारतक जानकार पेशेवरकेँ नौकरी दियनि, किएकतँ जर्मनीमे तकनीकी जानकारक अभाव रहैत छैक। जर्मनी प्रशिक्षु लोकक सेवा ब्रिटेन, फ्रांस, स्पेन, ग्रीस आ थाइलैंड सँ लैत अछि। तैं जर्मनी भारतक प्रशिक्षित आ बेरोजगार लोकक फौजसँ लाभान्वित होमऽ चाहैत अछि। चिन्तनीय बात तँ ई अछि जे जर्मनीक भाषासँ संबंधित कुचक्र आ षड्यंत्रक भागीदार अपन देशक साढ़े तीन सौ केन्द्रीय विद्यालय बनि गेल अछि, किएक तँ भारतमे करीब बीस हजार छात्र देव-भाषा संस्कृतक स्थान पर जर्मन भाषा पढ़बाक लेल विवश कयल जा रहल छथि। जर्मनीक अभीष्ट छैक जे भारतमे बीस हजार छात्रकेँ जर्मन सिखाओल जाय। संस्कृत सन प्राचीन देव-भाषाकेँ जीवंत राखक लेल बुद्धिजीवीवर्गकेँ जागरूक होमए पड़तैक।

शब्दार्थ

पर्याय-एकक बदला दोसर

सुदृढ़-मज़गूत

मुक्त-जकरा पर कोनो तरहक दबदबा नहि। स्वतंत्र

नीतिगत-नीतिसँ संबंधित

आयात-दोसर देशसँ आनब

निर्यात- अपना देशसँ बाहर पठाएब

अनवर-एहिखन, लगातार

दकियानूसी-पुरान पंथी, कट्टरपंथी

कूपमंडकीय-संकीर्ण, बहुत छोट

वैभव-धन, सम्पति

शीर्षस्थ-उच्च

प्रश्न ओ अभयास

1. लघुत्तरीय प्रश्न-

(i) भूमंडलीकरणक की अभिप्रया थिक?

(ii) राष्ट्रीय एकताक प्रमाण कोन ग्रंथसँ भेटैत अछि?

(iii) भूमंडलीकरणकेँ संभव करबामे कोन वस्तुक प्रगतिक पैघ भूमिका रहल?

(iv) विश्वशांतिक गारंटीक रूपमे ककरा प्रस्तुत कएल जाइत अछि?

(v) भूमंडलीकरणसँ कोन भाषाक उपेक्षा भेल?

(vi) विदेशी मुद्राक भंडार कोना बढ़ैत अछि?

(vii) विश्व व्यापारमे चमत्कारिक परिवर्तनक की अभिप्राय?

(viii) भूमंडलीकरणकेँ गैर समतामूलक किएक कहल जाइछ?

(ix) आयात-निर्यात सरकारी नियंत्रणसँ कहियासँ मुक्त अछि?

2. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) भूमंडलीकरणक वैशिष्ट्य लिखू।

(ii) भारतक केन्द्रीय विद्यालय संस्थान आ जर्मनीक संस्थानक बीच की समझौता भेल?

3. व्याकरण

(i) निम्नलिखित शब्दसँ विशेषण बनाऊ-

राष्ट्र, आधुनिक, कूपमंडक, व्यवसाय, चमत्कार, केन्द्र, अर्थ, राजनीति, समाज, परस्पर

(ii) विपरीतार्थक शब्द लिखू-

आयात, परोक्ष, सरल, सुगम, छोट

शिक्षकसँ-

1. शिक्षकसँ आग्रह जे भूमंडलीकरण शब्दसँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।
2. आयात-निर्यात ककरा कहल जाइछ? एहिसँ भारतकेँ कोन तरहेँ नफा-नुकसान होइत छैक,ताहिसँ छात्रकेँ परिचय कराबथि।

□□□